मंगत कुलजिंद

फ्रीज़

ई—मेल-mangat99999@yahoo.co.in

चालीस वर्षों की शैलजा आज अपने नवजात शिशु को दूध पिला रही थी पर उसे वह उत्तेजना महसूस नहीं हो रही थी जो उसने किताबों में पढ़ी थी अथवा जो उसकी सखियों ने बताई थी।

वैसे तो उसे आनन्दमई उत्तेजना अपने प्रेमी से शादी कर उससे सुहागरात मनाते, बच्चा जनते भी नहीं हुई थी, सब कुछ मशीनी-सा लग रहा था।

अपने बिजनैस में जाने का सरूर, नए कीर्तिमान स्थापित करने का नशा उसमें जवानी की आयु में ही था। उसके मन की बड़ी उलझन का उपाय उस की सखी ने यह बता कर दिया, "शैलजा ! वैज्ञानिकों ने नई तकनीक की खोज कर ली है, जिससे औरत अपनी ढल रही जवानी के अंत तक धन दौलत शोहरत प्राप्त करने के लिए निश्चित होकर काम कर सकती है।" पैसों का कोई मसला नहीं था। इंटरनेट पर सर्च कर आयु के सब से उपजाऊ वर्ष 23 वर्ष की आयु में शैलजा अपने अंडों को लैबारटरी में फ्रीज करवा आई थी और उनसे ही प्राप्त बच्चे को आज वह छाती से लगाए बैठी थी।

अंडों को फ्रीज करवा कर इतने सालों तक उनकी शक्ति को तो बरकरार रख लिया पर शरीर के दूसरे अंगों को तो फ्रीज करवाना संभव नहीं था।

हिन्दी अनुवाद : जगदीश राय कुलरियाँ

मंगत कुलजिंद : मुख्यतः व्यंग्य को समर्पित लेखक हैं। इसी लिए इनकी लघुकथाओं में व्यंग्यात्मक गुण है। इनके पंजाबी में दो लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा व्यंग्य एवं यात्रा वृतांत की पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। कई लघुकथाओं का हिंदी, शाहमुखी और मराठी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इनके द्वारा लम्बे समय से त्रैमासिक पत्रिका 'शबद त्रिंजन' का प्रकाशन किया जा रहा है।